निबंध

पाठशाला

आज के इस भौतिक युग मे धर्म के संस्कारों का लोप होता जाता है। भौतिक पढ़ाई हेतु कई विद्यालय मौजूद हैं, उनकी संख्या मे प्रतिदिन वृद्धि भी होती जा रही। बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त पर जीवन मे आगे बढ़ने के लिए कई अवसर भी पा रहे हैं, पर क्या शांत, निर्मल, स्वच्छ, सुंदर, तनाव रहित जीवन का भी ज्ञान पा रहे हैं?

अपने धर्म की मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी के बिना कई बच्चे धर्म से विमुख भी होते जा रहे। धर्मनिष्ठ संस्कारों से आत्मा को पल्लवित किए बिना धर्ममय जीवन संभव नही।

सम्यग्ज्ञान की ज्योति को विकसाने में संस्कार शाला का विशेष योगदान होता है। धार्मिक शिक्षा के बिना संस्कारों का शुद्धिकरण संभव नहीं। ज्ञान की आगार जैसी संस्कार शाला, बच्चों को पवित्र पथ पर स्थापित करती है।

“जिस शक्कर मे मिठास नही, वह शक्कर नही,
जिस पुष्प मे सुवास नही, वह पुष्प नही,
जिस औषध में गुण नही, वह औषधि नही,
और जिस मानव में सद्ज्ञान नही, वह मानव नही।

ऐसे ही सद्ज्ञान - सम्यकज्ञान को प्राप्त कराती है
" संस्कारशाला (पाठशाला) "।
सम्यक ज्ञान की धारा से आप्लावित व्यक्ति अपने घर को प्रेम मंदिर बनाता है। जीवन जीने की कला सिखाती है।

" संस्कार शाला - धार्मिक पाठशाला "।

पाठशाला ज्ञान का केंद्र होती है, जीवन निर्माण की प्रयोगशाला होती है। यहाँ धर्म के मूल सिद्धांत, नैतिक जीवन व शिष्टाचार की शिक्षा मिलती है। जिससे बच्चे का जीवन पथ सुगम सहज बनता है। धर्म के साथ ही संस्कृति का शिक्षण, सेवा साधना का प्रशिक्षण भी मिलता है।

पाठशाला का उद्देश्य :-

- जैन धर्म का बोध एवं उसकी रक्षा के लिए :-

आज के बच्चे हमारा कल है, भावी भगवान हैं। और पाठशाला वह स्थान जहाँ से न ही हमें केवल इस भव को सुधारने की शिक्षा मिलती है बल्कि स्वंय भगवान बनने का रास्ता दिखाया जाता है। यह उस [परम लक्ष्य] मोक्ष की पहली सीढ़ी है। एक वह समय था वह जैन धर्म के अलावा कोई धर्म नहीं था और आज का दिन है जब जैनों की संख्या अल्पसंख्यों मे आ गई है।

वर्तमान में पढ़ाने की पद्धति :-

- आज का युग :- डिजिटल युग :-

आज के युग डिजिटल युग कहना गलत नहीं होगा। एक इंटरनेट के माध्यम से हम कई आधुनिक तरीकों से पाठशाला मे पढ़ा सकते है। घर बैठे - बैठे देश विदेश मे भी जैन धर्म का प्रचार - प्रसार कर सकते हैं, जिनधर्म की महिमा सुना सकतें हैं। आज हम इंटरनेट व मोबाइल आदि की सुविधाओं से हम ऑनलाइन पाठशाला का संचालन कर सकतें है।

नए - नए रोचक तरीकों से बच्चों को पढ़ा सकते है जैसें की उन्हें आनलाईन मुनि - मुनियों के चित्र दिखा सकतें हैं, कथाएँ सुना सकतें है। और नए - नए खेल भी खिला सकतें जो बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनका ज्ञान वृद्धि भी कर सकतें हैं। जैसे - कौन बनेगा धर्म शिरोमणि, बच्चों की रूचि बढ़ाने के लिए यह बहुत अच्छा साधन है।

अंत मे अपनी बात को विराम देते हुए यही कहुंगी की यदि जन्म से समाधि तक की यात्रा को यदि आप यथार्थ करना चाहते हैं तो हम सब अपने बच्चों को पाठशाला अवश्य भेजें। और ज्ञान दान के इस कार्य को तन मन धन से करे।

और ये नन्हे-नन्हे बच्चे ही है जो हमारी धरोहर (और) हमारे जैन धर्म को बचा सकते और इसको बचाने का मार्ग इन्हे पाठशाला बतलाती है। जैन धर्म के सिद्धान्तों के चलकर ये बालक / बालिकी जैन धर्म की प्रभा को चारों ओर फैला सकते है और इसकी रक्षा कर सकते है।

- बच्चों मे संस्कारो की उत्पत्ति के लिए :-

किसी व्यक्ति ने सही ही कहा है, गीली मिट्टी को जिस भी आकार मे ढाल दो उसे आकार मे ढल जाती है उसी प्रकार बच्चों को बचपन मे जैसे संस्कार दिए जाए वह आगे जाकर वैसा ही बनता है। आज की पाठशाला की छोटी-छोटी शिक्षाएँ कल हमे महान-महान विद्वान देंगे। लौकिक जीवन की शिक्षा, अलौकिक जीवन की शिक्षा के साथ-साथ जीवन जीने की कला सिखाती है पाठशाला। अपने संस्कारों द्वारा बाल्य वय मे बच्चे जो शिक्षण प्राप्त करते है वे अपने परिवार, धर्म एवं समाज की गरिमा बढ़ाते है।

संस्कारशाला तो एक फैक्ट्री है जो सच्चे, सदाचारी और सुसंस्कारी व्यक्तित्व का निर्माण कर महत्वपूर्ण योगदान देती है।

- बच्चे तथा अपना जीवन सुधारने के लिए :-

इस बात मे तो बिल्कुल भी सोचने की बात नही है कि जो बालक पाठशाला जाएगें उसके जीवन तो अवश्य सुधरेगा लेकिन उनके साथ-साथ उनके परिवार का

भी कल्याण होगा। एक धर्मपुत्र अपने माता-पिता के प्रयोजन की सिद्धी, समाधी मरण का सहारा होता है। वह न केवल खुद सच्चे दुख के मार्ग पर चलता है बल्कि अपने परिवार को साथ लेकर चलता है।

पाठशाला के अद्यापक की विशेषता :-

- पाठशाला का अद्यापक जीवन जीने की कला सीखातें है।

गुरू बिना ज्ञान नही।
ज्ञान बिना आत्मा नही।
ध्यान, ज्ञान, धैर्य और कर्म।
सब गुरू की ही देन है।

गुरू विद्यार्थी के जीवन मे उस सूर्य के समान है जो उसके जीवन को पूरा रोशन करता है। पाठशाला बिना गुरू के व्यर्थ है। गुरू है जो सच्चा सुख का पाठ पढ़ाते है। समता भाव से जीवन जीना सीखाते है, गलत चीजों से दूर रहना का संदेश देते है अतः जीवन जीने का पाठ पढ़ाते है।

- पाठशाला का अद्यापक सच्चा सुख प्राप्त करने का मार्ग बताता है।

लौकिक जीवन की शिक्षा तो हर कोई प्रदान कर सकता है लेकिन अलौकिक शिक्षा का ज्ञान एक ज्ञानी ही बता सकता है। पाठशाला के अद्यापक बच्चों को सच्चा सुख जानने का मार्ग बताते है।